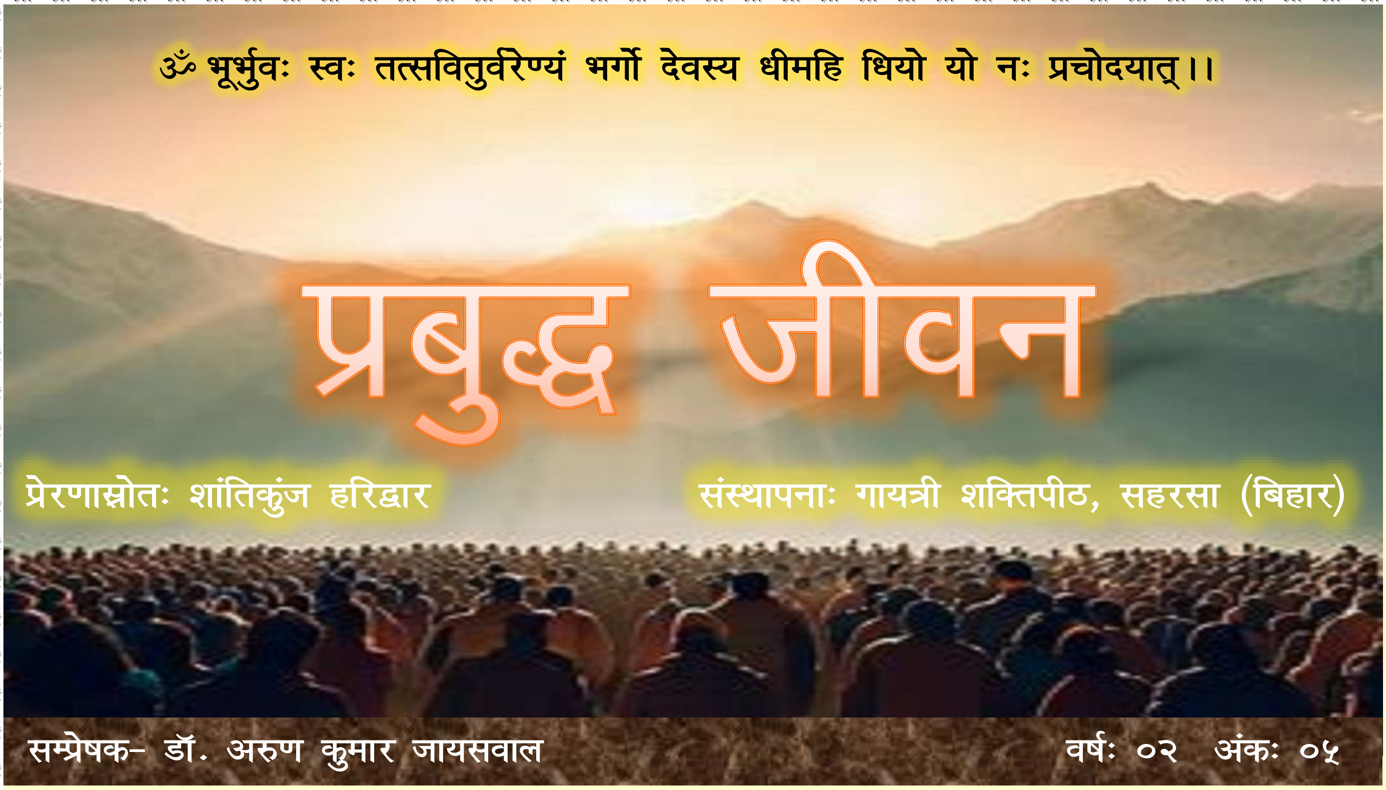

'कलियुगी या सतयुगी?'

हृदय के अन्दर स्वार्थपरता और त्याग भावना में सदैव युद्ध होता रहता है। स्वार्थ भावना का कहना है कि जो कुछ भी है, वह सब कुछ अपने लिए ही लेना चाहिए, अपने लिए संग्रह करना चाहिए और खुद ही सारी शौक मौज की सामग्रियों का उपभोग करना चाहिए। जबकि त्याग की भावना कहती है कि यह संसार हमारा नहीं परमात्मा का है, इसलिए हमें इसकी चोरी नहीं, बल्कि रखवाली करनी चाहिए। चौकीदार और माली बनाकर हमें भेजा गया है। इसलिए इस वाटिका की रखवाली और सिंचाई करना ही हमारा कर्तव्य है।

ये दोनों विचार मन में बड़े ही प्रबल वेग से उठते हैं और आपस में टकराते हैं। प्रायः कभी एक प्रबल हो जाता है कभी दूसरा। इसलिए जब मनुष्य दुर्भावनाओं से ग्रसित हो तो यह समझ लेना चाहिए कि इस समय यह कलियुगी है और जब उसमें त्याग भावनाओं का जोर हो तो जानना चाहिए कि अब यह व्यक्ति सतयुगी है।

हृदय से हृदय तक

दीपावली आर्य संस्कृति की महत् गरिमा से मण्डित दीपों के प्रकाश का महान सांस्कृतिक पर्व है जिसमें जीवन रस का सामूहिक गान हृदय के माध्यम से होता है। दीपावली हमारी ज्ञान–गामिनी सांस्कृतिक धरोहर है। यह उतनी ही पुरानी एवं प्राचीन है जितनी कि स्वयं संस्कृति। हमारी संस्कृति में सुख हो या दुःख, दोनों ही अवस्थाओं में प्रकाश करने की परम्परा रही है। वैदिक काल में यह प्रकाश अग्नि रूप में था, बाद में मंदिर के आरती–दीप के रूप में प्रतिष्ठित हो गया। इस प्रकार वैदिक काल से वर्तमान तक दीपों की गौरवमयी गरिमा से संयुक्त इस पर्व की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं मौलिक महत्ता के आलोक में दीपावली का अनुष्ठान किया जाता रहा है। दीपावली एक ओर जहाँ बुराई पर अच्छाई की जीत एवं भाईचारे का पर्व है, वहीं दूसरी ओर अंधकार को निराशा और प्रकाश को आशा का प्रतीक मानकर दीपों की शृंखला प्रज्वलित कर अंधकार दूर भगाने की प्रकृति का त्यौहार भी है। दीपावली, आत्म उजास की थाती है। मान्यता है कि होली महोत्सव है और दशहरा महानुष्ठान, जबकि एकमात्र दीपावली ही सम्पूर्ण अर्थों में महापर्व है।

लोक परम्परा में दीपावली की रात को मुख्यतया लक्ष्मी–गणेश के संयुक्त पूजा का विधान है। वास्तव में यह समृद्धि एवं सद्‌बुद्धि, दोनों की आराधना के साथ श्रेष्ठ मूल्यों एवं आदर्शों की स्थापना भी है। माता लक्ष्मी समृद्धि, विभूति एवं सम्पत्ति की देवी हैं और विघ्नहर्ता गणपति सद्‌बुद्धि एवं सद्ज्ञान के सर्वसमर्थ देवता। यहाँ समृद्धि का तात्पर्य विलासिता नहीं है, बल्कि यह सत्कर्मों में नियोजन है। सद्‌बुद्धि के प्रकाश में ही समृद्धि का सुनियोजन संभव हो पाता है, अन्यथा सद्‌बुद्धि के अभाव में केवल समृद्धि हितकारी नहीं हो सकती और विपुल बुद्धि भी धनाभाव के कारण मंद पड़ जाती है।

दीपावली अर्थात् दीपों की अवली याने कि प्रकाशित दीपों की पंक्तियाँ, जिन्हें देख कर कुछ यूँ लगता है कि नन्हें–नन्हें दीप संघर्षशील मानवीय चेतना के प्रमाण बनकर जग से तम को हर लेने की कोशिश करने में जुटे हैं। इन प्रकाशित दीपों से यह सत्य भी प्रकट होता है कि जीवन में स्नेह (प्रेम) बना रहे तो प्रकाश की कमी नहीं पड़ती। भावनात्मक टूटन से ही प्रायः जीवन में अंधेरा फैल जाता है। यदि हमारे जीवन का प्रत्येक कोना भावना और साधना की परम ज्योति से ज्योतित हो और हमारा प्रत्येक आचरण कर्म और आदर्श से मण्डित हों तो न केवल जीवन प्रकाश से परिपूर्ण होगा बल्कि हम माता लक्ष्मी की वैभव–विभूति, उसकी श्री–सम्पदा से भी लाभान्वित होंगे। इस दीपावली में लक्ष्मी–गणेश आपके हृदयों में, घरों में समृद्धि और सद्‌बुद्धि के रूप में विराजमान हों, ऐसी उनसे प्रार्थना है।

– अरुण कुमार जायसवाल

FAMILY

'Happy families are all alike; every unhappy is unhappy in its own way.' This is the first line of Leo Tolstoy's novel Anna Karenina. Here, what Tolstoy is trying to say is that every happy family has the same given factors like financial security, peace and mutual affection and all the good things. But an unhappy family is unhappy because it lacks a lot of things. And that list of things can be extremely long.

Families that lack the materiality and the elements that bring a sense of happiness can also be happy but it is a huge challenge to keep the equilibrium steady. Lack of amenities, space and sufficient means of survival may lead to stress, quarrels, disgruntled behaviour and a continuous sense of sadness that is all time prevalent.

Family is the nucleus of every human being who is born. We are comforted by the presence of our parents, grandparents, uncles, aunts, brothers and sisters. The sense of privilege and belongingness that emerges from a family is a precious one. The journey of life seems a bit comfortable because of the presence of a family. Family plays a huge role in an individual's life. A child who has a great upbringing naturally does very well in life and her/his opinion on success and failure are not defined by any superficial standards. Because she/he are successful and this is because they are happy with their lives. And that is one of the biggest contributions of a good family. They ensure that the value of money is restrictive and that the real things in life cannot be bought with money.

Family is the unit that endeavours to keep everything peaceful and smooth. Even in the face of adversity, it is the family that offers a silent strength and encouragement that nudges everyone to be patient and wait for the storm to pass.

Parents who instill good value systems in their children give rise to good citizens. These citizens go on to make a better nation. And what constitute a wonderful example of nationhood are its people.

Every family has its share of discontent and fights and arguments. But it is not what constricts it from being together. There has to be openness in relationships that allow the light and the hail to come in and therefore nourishing the roots. Families that go through dark phases also emerge out of that darkness's because they confront it together.

Festivals keep the strong bond of familial ties tight. It could be Deepawali, Christmas, Thanksgiving or any other occasions that makes one realise how essential it is to have a family around.

People who are blessed with a family must make sure that the ones who aren't so lucky must find them. To have our colleagues, friends and even acquaintances come over for a meal or a celebration and are a part of the happy activities. Who those are all alone in a strange city and for some reason cannot go home or the less fortunate who do not have anyone to call as a family – one must make sure that they are all invited over and become a part of those festivities. That they know that though they are alone, yet they are not alone. They have someone as an extension of a loved one in the strangeness around.

Not all families are made up of blood connections. There are communities and there are friends who are totally unrelated by blood and still they are the biggest examples of what a family comprises of. In the Hindu or Sanatana wisdom, we practice "Vasudaiva Kutumbakam" meaning the whole world is our family. It is the ultimate truth. We need to go beyond our secured existence and embrace the concept of extending our hand and inviting to those who are all alone and need to be accepted by a family.

- **Dr. Avhinav Shetty Jaiswal**

प्रार्थना अनमोल

प्रार्थना एक खूबसूरत अहसास है । इस अहसास की शक्ति हमें बताती है कि यदि हम निराश हो रहे हैं, हमें हाथ पर हाथ नहीं सूझ रहा है, हमारा साथ देनेवाला कोई नहीं दिख रहा है, हममें नकारात्मकता उफान मार रही है, हम दुःख के दलदल में फँसे जा रहे हैं तो हमें घबराना नहीं है । बस, उन अदृश्य ईश्वर के अदृश्य साथ पर भरोसा कर लेना है । वह भरोसा ही एक ऐसे मजबूत खम्भ की तरह होता है जिसपर हम चढते चले जाएँगे और अन्ततः अपनी मंजिल पर पहुँच जाएँगे । चाहे इसमें महीने लगें, साल लगें या जन्म-जन्मान्तर पर प्रार्थना कभी निष्फल नहीं होती । हाँ, इसके पूरे होने की अवधि का अन्तर हमारी ही वासनाओं, संस्कारों की परत दर परत टूटने पर निर्भर करता है । जिसके अन्दर जितने अधिक कषाय-कल्मष होंगे उन्हें रगड.-रगड.कर साफ करने में उतना ही समय लगेगा । इसलिए घबराना नहीं है न ही धैर्य खोकर मुख मोड. लेना है । अधीरों की इस मार्ग में कोई जगह ही नहीं है।

अध्यात्म मार्ग में सत्य, संयम, धैर्य, तप, त्याग, साधना और प्रेम आदि दिव्यातिदिव्य गुणों की अत्यधिक आवश्यकता पड.ती है। इसलिए इन गुणों का पालन-पोषण अपने अन्तःकरण में हर साधक को करना पड.ता है । परिणाम की चिन्ता किए बिना, परमात्मा से लगन लगाए रखना ही इस मार्ग का ऑक्सीजन कहा जा सकता है । नकारात्मकता इस मार्ग का कार्बनडाईऑक्साईड है । सकारात्मकता इस मार्ग का वह ऑक्सीजन है जो हमें अध्यात्म मार्ग के एवरेस्ट पर चढने में हमारी निरंतर सहायता करता है और पार्थना परमात्म बल की वह चुम्बकीय शक्ति है जिससे परमात्मा हमारी ओर खिंचे चले आते हैं । परमात्मा तो इस विश्व के मालिक हैं । उन्हें हम कुछ भी देकर कहाँ रिझा सकते हैं । सब उन्हीं का है तो उन्हीं की चीज उन्हें देकर हम कौन सा बडा उपहार उन्हें दे रहे हैं । तभी तो उन्हें हमारा आर्त्त स्वर ही कर्षित कर सकता है ।

अब प्रश्न उठता है यह हम करेंगे कैसे ? क्या हम संसार पूरी तरह छोड. देंगे? नहीं, हमें संसार नहीं छोड.ना है अपितु संसार में किस तरह निर्लिप्त भाव से, आनन्दपूर्वक जीएं यह रहस्य अध्यात्म हमें सिखाता है । हर रिश्तों से प्रेम करें तो परमात्मा का प्यार हमें स्वयं मिल जाएगा । हमारे हर भाव परमात्मा तक पहुंचते हैं । अगर परमात्मा को रिझाना है तो संसार के प्रति निर्लिप्त होकर, सांसारिकों से विशुद्ध प्रेम करके, ईर्ष्या-विद्वेष आदि से रहित होकर हमें आगे बढना होगा । यही हमारी परमात्मा के प्रति एक ऐसी मूक पर शानदार प्रार्थना होगी कि हम परमात्मा को पुकारें या नहीं पुकारें परमात्मा हमारे आस-पास होंगे । वे हमारे रोम-रोम में बसने लगेंगे । वे हमारी थोडी सी आराधना से प्रसन्न हो जाएँगे ।

प्रार्थना वह आर्त्त पुकार है जिससे परमात्मा प्रसन्न होते हैं और उनकी उस प्रसन्नता से भक्त प्रसन्नता का अनुभव करता है । भक्त का यह अनुभव उसे परमात्मा की चाशनी में घोल देता है । भक्त परमात्मा में ऐसे घुल-मिल जाता है जैसे चंद्रमा में चांदनी। यही नहीं, परमात्मा के प्रति की गई प्रार्थना हमें परमात्मा के गुणों को धारण करने योग्य बनाती है । हम परमात्मा के सत्यों को धारण करने योग्य बनते चले जाते हैं । प्रार्थना से कुछ हो न हो, हमारे पांच चोर काम-क्रोध-लोभ-मोह और अहंकार नियंत्रित होने लगते हैं । हमारे अन्दर बालक प्रह्लाद की सी सरलता आने लगती है । अब प्रह्लाद कुछ कहे या न कहे पर उसके हृदय में चल रही प्रार्थना उसकी रक्षा के लिए नृसिंह भगवान का रूप भी धारण कर सकती है क्योंकि भगवान क्या हैं - निर्मल अन्तःकरण की पुकार हैं । उन्हें ही भगवान की सच्ची अनुभूति होती है जिनका अन्तःकरण निर्मल होता है । जिस तरह काई से भरे जल में हम अपना प्रतिबिम्ब नहीं देख सकते ठीक उसी तरह कषाय-कल्मष से युक्त मन में भगवान की अनुभूति नहीं होती। जैसे श्रीकृष्ण दुर्योधन सहित सभी कौरवों के सामने खडे थे परन्तु भीष्म और विदुर जैसों को छोड.कर कोई उन्हें नहीं पहचान पाए । उल्टे, उन्हें अपशब्द भी कहा । जबकि, वहीं भक्त हृदय वाले, प्रार्थना से भरे हुए पाण्डवों ने उन्हें न केवल पहचाना अपितु समुचित आदर-सत्कार भी किया तो परिणाम सभी के सामने है । पाण्डवों ने भगवान और उनका अनुग्रह पाया और कौरवों ने भगवान की माया पाई और माया ने अन्ततः उन्हें अपने मायाजाल में फँसाकर निगल भी लिया और पाण्डवों को न केवल भगवान की कृपा मिली अपितु उनका खोया हुआ सम्पूर्ण राज्य भी मिल गया तो यही है प्रार्थनायुक्त मानव और प्रार्थनाविहीन मानव की गति । यह हमपर निर्भर करता है कि हम किस गति को पाना चाहते हैं । प्रार्थना करेंगे तो निस्सन्देह हमारी सद्गति होगी और प्रार्थना नहीं करेंगे तो हमारी दुर्गति सुनिश्चित है ।

– डॉ. लीना सिन्हा

सुधा बिन्दु

(प्रत्येक रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार कक्षा में बोले गए विषय के कुछ अंश और जिज्ञासा के अंतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर)

- **इंडक्शन प्रोग्राम का मतलब होता है आप शुरुआत करते हैं, इनड्यूस करते हैं, मतलब घुसाना, प्रवेश दिलाना,छोटी-छोटी बातें बताना किस तरह से रहना है, किस तरह से पढ़ाई करनी है। वहां के अनुशासन, नियम कायदे को जानना और उसे आत्मसात करना। चाहे वह विद्यालय हो, चाहे विश्वविद्यालय हो, चाहे मेडिकल कॉलेज हो, चाहे इंजीनियरिंग कॉलेज हो, कोई भी शिक्षण संस्थान जहां आपको प्रवेश मिलता है उस संस्थान के बारे में आप जानें और संस्थान आपके बारे में जाने यह इंडक्शन प्रोग्राम है।**
- **ज्ञान दीक्षा का मतलब होता है कि आप यहां पर जो सीखने आए हैं, जो जानने आए हैं, जो नॉलेज प्राप्त करने आए हैं, उसके बारे में आप कितना तैयार हैं और कितना तैयार नहीं हैं, उसको उस ज्ञान के लिए, जो शिक्षण संस्थान में ज्ञान प्राप्त करने आए हैं, उसके लिए आपको तैयार करते हैं। दीक्षा यानी बीज बोना, बीजा रोपण बीज की प्रतिष्ठा, फिर बीज का अंकुरण होता है।**
- **किसी भी पढ़ाई में प्रवेश के समय, अध्ययन में प्रवेश के समय तीन बातें होती हैं- स्किल,स्ट्रैंथ और सब्जेक्ट यानि सिलेबस ।इन तीनों की समझ भली-भांति अगर है तो आप अच्छे से शिक्षण -प्रशिक्षण ले पाएंगे।**
- **फिजिक्स ,केमिस्ट्री ,मैथ्स, बॉटनी ,जूलॉजी यह प्योर साइंस है ।इंजीनियरिंग, मेडिकल, कंप्यूटर प्रशिक्षण यह अप्लाइड साइंस है। अभी तक आपने जानकारी इकट्ठा की, जानकारी जब अनुभव में उतरता है तो ज्ञान बनता है और ज्ञान जब पूर्णता को प्राप्त करता है तो विज्ञान बनता है।**
- **चेतना का विज्ञान अध्यात्म है और उसका एप्लीकेशन धर्म है यानि अध्यात्म प्योर साइंस है और धर्म अप्लाइड साइंस है। धर्म का मतलब पूजा-पाठ नहीं, धर्म का मतलब कर्तव्य होता है ।विद्यार्थी धर्म ,अध्यापक धर्म, पितृ धर्म,मातृ धर्म ,पुत्र धर्म, पुत्री धर्म आदि अनेक कर्तव्य हैं हमारे यानि इन अर्थों में हम सभी धार्मिक हैं, किसी न किसी धर्म का यानि अपने कर्तव्य का पालन कर रहे हैं। विद्यार्थी का धर्म है विद्या अध्ययन करना, विद्या का अर्जन करना, विद्या को अर्थपूर्ण बनाना, सार्थक बनाना यह विद्यार्थी का कर्तव्य है।**
- **इंसान का मन संसार की मोह-माया में फंसा रहता है और शरीर के रोगों से भी कष्ट पाता रहता है ।ऐसे सभी लोगों के लिए राम नाम और राम कथा राम बाण औषधि का काम करती है।**
- **गोस्वामी जी कहते हैं अगर हम बुद्धि को परिमार्जित करें, चित्त को शुद्ध करें तो बुद्धि की ज्योति में ज्ञान की ज्योति प्रदीप्त होगी ।जो अनुभूति का विषय है।**
- **यदि व्यक्ति का विवेक सजग हो तो स्पष्ट रूप से दिख सकता है ।जिस वस्तु के अभाव में ,जिस व्यक्ति के वियोग में वह दुखी हो रहा है उस वस्तु या व्यक्ति को पाकर भी वह सुखी नहीं रह पाता ,फिर इतनी मेहनत क्यों? अज्ञानता के कारण। अभ्यास और संस्कार के कारण व्यक्ति सत्य को देख नहीं पाता।**
- **बुद्ध पुरुषों को दर्द होता है परंतु दुख नहीं होता है ।वे मानसिक रूप से प्रताड़ित नहीं होते, दिमागी तौर पर वे पूरी तरह शांत, संतुलित, स्थिर रहते हैं। यह है निवृत्ति।**
- **आत्मा पर काल का कोई वश नहीं, कोई प्रभाव नहीं है यानि लक्ष्य के प्रति अडिग मन भगवान में है, ज्ञान की बातें अंतःकरण में उठ रही है, तो यह मानकर चलें कि काल का कोई डर नहीं ।**

- जब मन निर्मल होता है, जब इंद्रियां निग्रहित होती है, जब धर्म का तत्व समझ में आ जाता है, धर्म का तत्व समझने का मतलब है प्रकृति का,जीवन का,परमेश्वर का रहस्य समझ में आ जाता है, जब यह पता चल जाए कि संसार में कुछ मिलता-जुलता नहीं है, चित्त में जो कर्म राशि है, जो संस्कार है, वह यात्रा चल रही है। चित्र की परते टूटती रहती हैं, बनती रहती हैं ।पथिक जी के शब्दों में तुम सोते हो-जागते हो,लेकिन तुम्हारा प्रारब्ध कभी नहीं सोता। चित्त में घटनाएं बनती रहती हैं, उभरती रहतीं है रोज-रोज। इसलिए चित्त शुद्धि के लिए अकाम।अकाम होना सांसारिक दृष्टि से बहुत विचित्र है, हमारे पास कोई कामना नहीं है फिर भी लगे हुए हैं। या तो विवशता हो सकती है या तो ज्ञान हो सकता है ।ये अकाम विवशता नहीं, ज्ञान है।
- संतोष और क्षमा क्या होता है? दोनों हमारे मन की हाय-हाय को मिटा देती है ।मन में जो विक्षोभ है, क्षुब्धता है,मन में जो हलचल, है,त्राहिमाम मचा रहता है उसे शांत करता है ।
- अध्यात्म जीवन का शीर्षासन है। जो सांसारिक जीवन में सिखाया जाता है, उसको उलट दें तो अध्यात्म हो जाता है।
- जीवन की उपलब्धि है बाहरी,अध्यात्म की उपलब्धि है आंतरिक।
- पहले ज्ञान का दीपक जलाएं, गांठ को देखें और प्रभु की कृपा से गांठ खोलें ।यह ज्ञान दीपक है चित्त शुद्धि की व्यवस्था ।जब चित्त शुद्ध होगा तो पतंजलि कहते हैं स्फटिक की तरह हो जाएगा। स्फटिक अपने आप प्रकाशित होता है,वह कभी मैला नहीं होता।यह चित्त ऐसा ही बन गया। जब ज्ञान दीपक जल जाता है तब समझ में आता है कि हम भ्रांति में जी रहे थे, सत्य कुछ और था।
- जब ऋतंभरा प्रज्ञा जागती है तब दृष्टि अनंत और अपार हो जाती है।
- हमारी जीवन शैली शुद्ध हो,हमारा जीवन धर्ममय हो और हमारी जो प्रकृति है वह भी शुद्ध हो, तब दीपक जलेगा।यह विज्ञानमय दीपक है, यह ज्ञान का दीपक है। फिर सब कुछ साफ-साफ दिखेगा ।क्या करना है और क्या नहीं करना है स्पष्ट दिखेगा, स्पष्ट पता चलेगा।
- प्रवृत्ति आपको स्थिर नहीं रहने देगी चाहे कारण सम्मान हो चाहे कारण अपमान हो, वो कारण तिरस्कार भी हो सकता है, वो कारण पुरस्कार भी हो सकता है, वो कारण निंदा भी हो सकती है, वो कारण प्रशंसा भी हो सकती है ।इसलिए अपने मन को, अपने तन को, अपने जीवन को निवृत्ति मार्ग पर ले चलना चाहिए।
- प्रवृत्ति वाले लोगों को झटका लगेगा मनःस्थिति में भी परिस्थिति में भी। प्रवृत्ति आपको खींचेगी,आपको डिस्टर्ब करेगी,परेशान करेगी आपके मन में विक्षोभ पैदा करेगी,आपकी परिस्थितियों में हलचल पैदा करेगी। कभी प्रशंसा,कभी निंदा,कभी अपमान,कभी सम्मान, कभी तिरस्कार,कभी पुरस्कार यह प्रवृत्ति के गुण और दोष दोनों हैं।
- स्थिरता के लिए निवृत्ति है, अस्थिरता के लिए प्रवृत्ति है। निवृत्ति का नाम भगवान है और प्रवृत्ति का नाम संसार है।
- जिसने निवृत्ति को पा लिया,जिसने निवृत्ति को जान लिया उसके मन को डिगा नहीं सकते,हेर-फ़ेर नहीं कर सकते, भ्रमित नहीं कर सकते।

जिज्ञासा

प्रश्नः-आश्विन नवरात्रि को बोधन नवरात्रि क्यों कहते हैं?

उत्तर-सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने एक पुस्तक लिखी है राम की शक्तिपूजा। उसमें उन्होंने लिखा है राम रावण के बीच युद्ध हो रहा था, एक दिन भगवान राम कितने भी बाण मारे, उनका अस्त्र काम ही नहीं कर रहा था, अमोघ बाण, अमोघ दिव्यास्त्र सब काम ही नहीं कर रहे थे। राम बड़े चिंतित हो गए। उस दिन का युद्ध रावण के पक्ष में रहा। फिर जाम्बवन्त ने कहा-आप इतने परेशान क्यों है? एक दिन के युद्ध से निर्णय हो गया क्या? आप तो दिव्य चेतना हैं। प्रश्न ये नहीं है कि आज के युद्ध का परिणाम क्या हुआ, आज सारे दिव्यास्त्र विफल क्यों हो गए, मैं ये देख रहा था, रावण तो युद्ध कर ही नहीं रहा था, रावण तो खड़ा है, पीछे से तो युद्ध आदि शक्ति स्वयं कर रही हैं। प्रश्न ये है। निराला जी लिखते हैं-दो आराधन का, आराधन से उत्तर। रावण को आदि शक्ति ने वरदान दिया हुआ है, वो अपने वचन का पालन कर रही हैं। आप भी उनकी आराधना करके वरदान लें। तो राम ने कहा ठीक है। लेकिन आश्विन मास देवों के शयन का काल होता है। फिर भी राम ने शक्ति पूजा प्रारंभ करने की सोची, 108 नीलकमल से देवी के अष्टोत्तर शतनाम के द्वारा आराधना होनी थी। हनुमान जी से कहा राम ने, ये नीलकमल कहाँ मिलेंगे? तो हनुमान जी ने कहा कि हम लायेंगे। लंका में नील कमल का सरोवर था। वहाँ से हनुमान जी ने नौ दिनों तक नीलकमल लाया। आगे का युद्ध लक्ष्मण जी संभाल लेंगे , राम आराधना करेंगे। जब अंतिम दिन108वाँ नीलकमल का फूल चढ़ाने का क्रम आया तो एक नीलकमल गायब था। राम जी ने सोचा, ये तो आराधना में विघ्न आ गया, उन्हें याद आया कि कौशल्या माँ मुझे राजीव नयन कहती थी बचपन में, मतलब कमल लोचन, तो राम ने अपने तरकश से बाण निकाला और अपनी एक आंख निकालने लगे देवी को चढ़ाने के लिए, तो देवी प्रकट हुईं, मैंने तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए एक फूल हटा लिया था, पर मैं तुम्हारी आराधना से प्रसन्न हूँ, फिर विजयी भव का आशीर्वाद दिया।

तो वो काल देव-देवियों के शयन का काल होता है, असमय राम ने देवी का जागरण किया, इसलिए उसे बोधन नवरात्रि कहते हैं, जागरण नवरात्रि भी कहते हैं। बोध मतलब जागरण। बंगला में कहते हैं बोधन मतलब जागरण। बंगाल का शब्द है। जैसे उद्बोधन, संबोधन है उसी तरह है बोधन।

प्रश्नः-संगीत का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है? संगीत का वास्तविक महत्त्व क्या है?

उत्तर-स्वरों का लय संगीत है, ताल संगीत है। प्रकृति में जो संगीत गुंजित है, उसी संगीत से हम अपना सुर-ताल बनाते हैं, प्रकृति में लय है,पर हमारे जीवन की लय खत्म हो गई है। प्रकृति में समस्वरता है, पर जीवन की जो समस्वरता प्रकृति से है,वो समाप्त हो गई है। संगीत हमारे जीवन में एक लयबद्धता पैदा करता है। आज के आदमी के जीवन में नाना प्रकार के मानसिक तनाव हैं,जिसके कारण वह शारीरिक रूप से रोगी हो रहा है, राग से लय और ताल से स्वर मिलता है, उससे शरीर और मन दोनों के साथ प्रकृति से समस्वरता बनती है। तो अनिद्रा के लिए, मानसिक शांति के लिए, आरोग्य के लिए, स्वास्थ्य के लिए और कई बार प्रतिभा जागरण के लिए संगीत का उपयोग होता है। अगर संगीत सही हो तो शरीर की थकान चली जाती है, मिट जाती है। राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम तो बहुत मेहनती थे, बहुत काम करते थे, अकेले में वीणा बजाकर थकान मिटाते थे, राष्ट्रपति भवन में भी इनकी वीणा थी। तो हमारे जीवन में

संगीत का यही महत्त्व है। प्रकृति के साथ हमारा जितना रेजोनेंस होगा यानि समस्वरता होगी, लय होगा, मतलब जीवन जितना प्रकृति के अनुरूप होगा, उतना हम स्वस्थ रहेंगे, निरोग रहेंगे, आरोग्य रहेंगे। ये समस्वरता, ये लय, ये ताल हमारी बिगड़ी हुई है, इस लय को पुनः पैदा करने का काम संगीत करता है। संगीत में जो राग-रागनियां बनाई गई है, वो यही कार्य करती है। संगीत के जो जानकार लोग हैं, किस समय, किस वेला में, किस मौसम में कौन सा राग कारगर होता है, वो राग चिकित्सा करते हैं ।

प्रश्नः- आजकल रेप की समस्या बहुत तेजी से बढ़ रही है, कुछ महिला आवाज उठा लेती है, कुछ के साथ अपने परिवार के लोग गलत करते हैं,जिसका वह विरोध नहीं कर पाती है। वह खुद को ही अपने पूर्व जन्म का कर्म मानकर घुट-घुटकर मरती है। मेरा प्रश्न यह है कि जो लड़की या महिला के साथ गलत होता है अगर वह सामाजिक एक्शन किसी दबाव में ना ले पा रही है तो अध्यात्म के रास्ते से आरोपी को कैसे सजा दिलवा सके?

उत्तर-देखिए, यह दिमाग पर शैतान का हावी होना है। वातावरण में जो अशुद्धियां है, प्रदूषण है, जो विष घुला है, वो विष लोगों के मन में घुल रहा है, इंसान के अंदर जो अतृप्ति है, इसलिए रेप की ही समस्या का नहीं, जितनी मानसिक विकृतियां है, सबका मूल कारण यही है। इस बीमारी की औषधि है- प्रार्थना, प्राणायाम, ध्यान, संगीत और प्रकृति के अनुसार जीवनवृत्त। आयुर्वेद में स्वस्थवृत्त का वर्णन है, मतलब कब, क्या खाएं? दिनचर्या और ऋतुचर्या की चर्चा है। अगर दिनचर्या और ऋतुचर्या ठीक नहीं है तो मन का उद्वेलित और उद्वेग संपन्न होना स्वभाविक है। फिर कोई आदमी कुछ भी कर सकता है। कोई आदमी तन से करता है तो उसकी चर्चा होती है, कोई आदमी मन से करता है तो उसकी चर्चा नहीं होती है। आज मानसिक भ्रष्टता फैल गई है। अगर आप लड़की से, लड़के से पूछें तो 90 प्रतिशत के मन में जबरदस्ती करने का ख्याल आता है, भले वो रेप का विरोध करे। इसका इलाज प्रार्थना,साधना के अलावा प्रकृति के साथ जीवन का सहचर्य है। दरअसल हमारे वातावरण में प्रदूषण छा गया है, जो जीवनक्रम है वो गड़बड़ा गया है, घोर तामसिक हो गया है। खान-पान, रहन-सहन, आचरण-व्यवहार, सब तामसिक हो गया है। न सोने का न जागने का, न जीने का न मरने का कुछ है ही नहीं। डिस्को पब की संस्कृति व्यक्ति का मनोरंजन नहीं करते, सच कहें उसकी मानसिक दुर्बलता और मानसिक विकृति को बढ़ाते हैं।

आपका जो प्रश्न है कि अध्यात्म के माध्यम से कैसे सजा दी जा सकती है? तो पहली बात, अध्यात्म सजा देने में विश्वास नहीं रखता। सजा तो सामाजिक व्यवस्था है। अध्यात्म में तो प्रकृति सजा देती है। अध्यात्म में लॉ एंड ऑर्डर मेंटेन करना प्रकृति का काम है, व्यक्ति का काम है ही नहीं। इसलिए अध्यात्म की बात छोड़ दें। ऐसा तो हो ही नहीं सकता कि उसे सजा ना मिले, निश्चितरूपेण सजा मिलेगी। प्रकृति का संविधान कर्म-फल-विधान है, चाहे आप माने या न मानें,पर घुट-घुटकर न मरें, जीवन में आगे बढ़ें। लेकिन आप प्रकृति पर भरोसा तो करें। दरअसल हमारा परिवार, हमारा समाज, हमारा जीवन क्रम व्यवस्थित नहीं है। हमारे जीवन की लय बिगड़ गई है, समस्या यह है।

तो पहली बात सभी को अपने खानपान में, रहन-सहन में, संग-साथ में, यानि सबको एक साथ कहें तो आहार-विहार में, उसमें सात्विकता का संवर्धन करें। जितना सात्विक आहार-विहार होगा, उतना तमस जायेगा, उतना रजोगुण जाएगा, यानि विकार जायेगा। इंसान के हाथ में एक ही चीज़ है खान-पान,रहन सहन, हमें उस पर ही फोकस करना

चाहिए। ये मत सोचिए कि कोई स्त्री हमें ब्रह्मचर्य सिखाएगी, आप ये भी मत सोचें कि इस सृष्टि में कोई दूसरा है, दूसरा है ही नहीं कोई, कोई महिला और पुरूष वेदांत की भाषा में नहीं है। साड़ी पहना दो तो महिला, बाल वाल ठीक करके पैंट शर्ट पहना दो तो पुरुष लगने लगेंगे। आत्मा तो न नर है न नारी है। इसलिए गीता में भगवान कहते हैं कि शरीर वस्त्र है। तो जितनी सात्विकता बढ़ाएंगे, उतना इस समस्या का समाधान होता चला जाएगा। इसलिए जो भी रिश्ता बनायें सहमति से बनायें, तो घुटन नहीं होगा। चाहे परिवार के हों,चाहे कोई हो,जबरदस्ती किया तो गलत किया न, सजा तो उसे अवश्य मिलेगी। समय हमारे आपके द्वारा तय नहीं होगा, वो तो काल तय करेगा।

प्रश्न:- कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के बच्चों का अनुरोध है, अपने-अपने भविष्य का मार्गदर्शन चाहते हैं, आपके क्लीनक तक नहीं जा पाते हैं। इसलिए आपसे नम्र निवेदन है कि बच्चों को आप सामूहिक रूप से मार्गदर्शन करें।

उत्तर- सामूहिक मार्गदर्शन नहीं होता है, व्यक्तिगत होता है। व्यक्ति की समस्या सामूहिक नहीं होती है, सबकी समस्या अलग-अलग होती है। सामूहिक रूप से आपको ज्योतिषशास्त्र का इंट्रोडक्शन दिया जा सकता है, वह इंट्रोडक्शन है कर्म-फल-विधान। पहली बात, ज्योतिष कर्म शास्त्र है, ज्योतिष दर्शन शास्त्र नहीं है। आप ज्योतिष जानो या ना जानो, ज्योतिषी के पास जाएँ या ना जाएँ, अगर आप कर्म के नियम का पालन करते हैं, तो स्वाभाविक रूप से कर्म प्राक्षालित होते चले जाएंगे। सत्कर्म, सद्भाव, सद्विचार से ग्रह आपके परिमार्जित होते चले जाएंगे और अगर सत्कर्म,सद्भाव और सदविचार का पालन नहीं करते तो ग्रह आपके दूषित होते चले जाएंगे। तो ग्रह का परिमार्जन और ग्रह का प्रदूषण आपके हाथ में है। अगर आप शतायु जीना चाहते हैं, तो अपने खान-पान, रहन-सहन के साथ अपने कर्म पर ध्यान दें, तो आपकी उम्र बढ़ती चली जाएगी। खराब कर्म है तो बढ़ी हुई उम्र भी घटती चली जाएगी। तो आप कर्म और कर्मफल के सिद्धांत यानि उसके दर्शन पर विश्वास करें और उसको मानते चलें। यह काम प्रकृति करती है। ग्रह देवता, प्रकृति की ही शक्तियां हैं, प्रकृति से अलग नहीं हैं। ग्रह आपके अच्छे या बुरे सभी कर्मों को उभारते हैं। दो चक्र होते हैं-कर्म चक्र और कालचक्र, ये दोनों व्यवस्थित होकर जीवन चक्र का निर्माण करते हैं। आपके हाथ में कालचक्र नहीं है, आपके हाथ में कर्मचक्र है। अगर आपका कर्मचक्र सही है तो काल आपके लिए समय, सुविधा और सहयोग लाएगा। क्योंकि कर्मचक्र ही कालचक्र को व्यवस्थित करता है। हाँ कालचक्र में कल क्या आने वाला है? उसके लिए आप व्यक्तिगत रूप से मिलें। कालचक्र अलग-अलग नहीं, उसके परिणाम सबके लिए अलग-अलग हैं। तो अपने कर्म पर ध्यान दें, अगर आप कर्म सही करते हैं, तो जीवन में 90 प्रतिशत घटनाएं आपके अनुकूल घटित होंगी और भविष्य भी आपका लगभग सुरक्षित रहेगा।

प्रश्न:- पुरुष को चाहिए था घर, स्त्री गृहिणी बन गई, पुरुष को चाहिए था प्रेम, स्त्री अर्धांगिनी बन गई, पुरुष को चाहिए था सेविका, स्त्री दासी बन गई, पुरुष को चाहिए था परम स्नेह, स्त्री माँ बन गई। लेकिन पुरुष वही रहा, वो ज़रा भी नहीं बदला। आप क्या सोचते हैं?

उत्तर-स्त्री को चाहिए था पति, पुरुष पति बन गया, स्त्री को चाहिए था प्रेम, पुरुष प्रेमी बन गया, स्त्री को चाहिए था संरक्षण, पुरुष संरक्षक बन गया। ये सब नहीं हो सकता है क्या? ऐसा भी कोई लिख सकता है। नारीवादी विचार के चक्कर में संतुलन खो जाता है। पुरुषों को घर चाहिए तो क्या नारियों को घर नहीं चाहिए? यह दृष्टिकोण का दूषण है।

यह दूषित दृष्टिकोण है। जो चीजें पुरुष को चाहिए वो चीजें स्त्री को नहीं चाहिए क्या? घर पर ज्यादा ममता किसकी होती है? स्त्री की होती है। स्त्री को गहना-जेवर नहीं चाहिए, कपड़ा-लत्ता नहीं चाहिए? जिसने भी ये लिखा है, इसमें संतुलन है क्या? स्त्री को प्रेम नहीं चाहिए क्या? आज जो फेमिनिस्ट लोग हैं वो आज भी कहते हैं कि स्त्री अभी भी बहुत दबी-कुचली है, हाँ ऐसा है, लेकिन अब बहुत अनुपात उसका घट गया है। पर ये कहना कि स्त्री का अस्तित्व खत्म हो गया है, शायद सही नहीं है। इसके लिए पुरुष से ज्यादा स्त्री ही जिम्मेदार है। प्रश्न यह है कि फिर क्या करना चाहिए? स्त्री को बराबरी करनी चाहिए पुरुष से, बाल कटाकर, पैंट शर्ट पहन लेना चाहिए, कटाईये, पहनिए, किसी को दिक्कत नहीं है, पर इससे बराबरी हो जाएगी क्या? ये बराबरी नहीं है। बराबरी करनी है तो पुरुषार्थ में बराबरी करनी चाहिए, चिंतन में बराबरी करनी चाहिए। लेकिन ऐसे लोग जो ये लिखते हैं उन्हें बराबरी ही नहीं, वर्चस्व होना चाहिए।

सच कहें तो सभी के जीवन में विपदायें होती हैं, पुरुष स्त्री का कवच होता है, कभी-कभी स्त्री पुरुष की कवच होती है। हमेशा पहला वार पुरुष पर होता है। न स्त्री दासी है न सेविका है, स्त्री है सहचरी। पुरुष और स्त्री घर में बराबर का स्वामित्व और बराबर का अधिकार रखते हैं। आज भी दहेज के लिए लड़कियों को, बहुओं को प्रताड़ित किया जाता है, जलाया जाता है। यह उस परिवार की विकृत मानसिकता का द्योतक है। लेकिन एक चीज़ बताइए, पुरुष को कब ईर्ष्या हुई है? पर स्त्री तो ईर्ष्या में ही जली जाती है, प्रायः-प्रायः ऐसा देखने को मिलता है। कहते हैं न स्त्रियोचित गुण हैं ईर्ष्या और पुरुषोचित गुण है अहंकार। दोनों में दोष है और दोनों में गुण है। ये हम नहीं कहते कि पुरुषों में गुण ही गुण है, स्त्रियों में दोष ही दोष है। पर दोनों एक-दूसरे के संबल हैं, एक-दूसरे के सहयोगी हैं, पूरक हैं। दोनों एक-दूसरों की भावनाओं के आधार हैं। यहाँ तक बातें सही है पर जो बातें गलत हैं, उसकी व्याख्या कर उसे जस्टिफाई करें, इसका क्या मतलब है? अच्छा ये बताइए स्त्री माँ बन गयी, क्या वह केवल बेटा की ही माँ है, बेटी की माँ नहीं है? क्या बेटी को प्रेम नहीं चाहिए था अपनी माँ से? अरे माँ बनने पर तो स्त्री पूर्ण हो जाती है। अच्छा ये बताइए मातृत्व की अभिलाषा ज्यादा होती है या पितृत्व की अभिलाषा ज्यादा होती है? बताइए। हमें तो इन बातों में कोई सत्य नहीं लगता है।

सच यह है कि स्त्री-पुरुष दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों मिल करके एक दूसरे की भावनात्मक, एक दूसरे की आर्थिक, एक दूसरे की सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। ऐसा नहीं कह सकते कि पुरुष की आवश्यकता नहीं और ये भी बात गलत है कि स्त्री की आवश्यकता नहीं है। दोनों की शारीरिक आवश्यकतायें, दोनों की भावनात्मक आवश्यकताएँ, दोनों की आर्थिक आवश्यकताएँ, दोनों की सामाजिक आवश्यकताएँ होती हैं। हम लोग जब किसी शादी विवाह के कार्यक्रम में जाते हैं या किसी पार्टी फंक्शन में जाते हैं, तो स्त्री वहां दासी बनकर खड़ी हुई मिलती है क्या? मालकिन की तरह मिलती है। इस तरह की अनर्गल बातें नहीं सोचनी चाहिए।

देखिये विचार और तर्क सत्य नहीं होते है, औचित्य सत्य होता है कि जो कथन है,जो विचार है वो कितना अर्थपूर्ण है, औचित्यपूर्ण है। आज के समय में ये बातें निरर्थक है।

प्रश्न:- हमने कुछ दिनों पहले पढ़ा- एक अत्यंत भावुक इंसान का भावशून्य होना बड़ी घटना है। आपने कभी कहा था कि भावुकता नेगेटिव इमोशन है। तो क्या भावशून्य होना भी नेगेटिव शब्द है या पॉज़िटिव शब्द है?

उत्तर-पहली बात कि भाव शून्य दशा होती नहीं है, चाहे नेगेटिव हो चाहे पॉज़िटिव हो, भाव तो होता है। भाव शून्यता की दशा, स्तब्ध होने की दशा होती है। जो कुछ समय के लिए होती है, 2 मिनट, 10 मिनट,आधे घंटे तक ज्यादा से ज्यादा होती है। भाव शून्य जिसे अंग्रेजी में कहते हैं इमोशनलेस, शायद विरले ही कोई होता होगा। ये ना नेगेटिव है ना पॉज़िटिव है, पहली बात तो होता ही नहीं है और होता है तो थोड़ी देर के लिए होता है। चोट लगना इमरजेंसी है, स्वाभाविक दशा नहीं है। बुखार आना स्वाभाविक दशा नहीं है शरीर की। चोट भी खत्म हो जाता है बुखार भी खत्म हो जाता है। उसी तरह भावशून्य होना भी स्वाभाविक दशा नहीं है। थोड़ी देर के लिए होता है और चला जाता है। ये नेगेटिव-पॉज़िटिव दशा नहीं है, अवाक हो जाना, स्तब्ध हो जाना, उसकी दशा है। किसी के सामने आश्चर्यजनक घटना घटी तो अवाक रह गया, स्तब्ध रह गया, स्टैचू बनकर रह गया, खड़ा का खड़ा ही रह गया, वो भावशून्य हो गया, यानि कुछ कहने-सुनने,बोलने-बताने की स्थिति में नहीं रह गया। एक ग़ज़ल है न-आपको देखकर देखता रह गया, क्या कहूं और कहने को क्या रह गया । भावुकता नेगेटिव इमोशन है, परवरटेड इमोशन है। भाव, इमोशन जिसे इमोशनल स्टेबिलिटी कहते हैं , वो पॉज़िटिव इमोशन है। भावनात्मक अस्थिरता नेगेटिव इमोशन है और भावनात्मक स्थिरता पॉज़िटिव इमोशन है। आदमी स्थिर होकरके, अच्छी भावनाओं के साथ कुछ अच्छा सोचेगा, अच्छा करने पर विचार करेगा, क्योंकि भावनाएँ मनुष्य को प्रेरित करती हैं। अगर वह नेगेटिव है तो नेगेटिवली प्रेरित करेगी, अगर पॉज़िटिव है तो पॉज़िटिवली प्रेरित करेगी। शायद यहाँ भाव शून्य होने का अर्थ यह भी कह सकते हैं कि भावना का हीन होना, पत्थर दिल होना, लेकिन भाव के बिना व्यक्ति हो ही नहीं सकता, भले वो निगेटिव हो या पॉज़िटिव।

अक्टूबर माह की गतिविधियाँ

दिनांक 02-10-2024 श्रद्धा और आस्था का पावन पर्व पितृपक्ष आज आश्विन कृष्ण पक्ष आमावश्य को समाप्त हो गया। इस अवसर पर 250 से ज्यादा परिजन सामुहिक रुप से अपने पूर्वजों का स्मरण करते हुए उनको श्रद्धासुमन अर्पित करतेहुए तर्पण और पिण्डदान किया तथा उसके पश्चात हवन-पूजन किया।श्राद्ध का कर्मकांड शक्तिपीठ के परिव्राजक वेदप्रकाश जी ने करवाया।कार्यक्रम सुचारू रुप से संपन्नकरवाने में शक्तिपीठ की देवकान्या एवं युवामंडल काभरपूर सहयोग मिलता रहा।

गायत्री शक्तिपीठ में चल रहे बाल संस्कारशाला में महात्मा गांधी एवम लाल बहादुर शास्त्री जी का जयंती मनाया गया। संस्कारशाला के बच्चों एवम आचार्यों द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की गई...

बोधन नवरात्रि के प्रथम दिवस को नवदुर्गा के प्रथम स्वरूप मां श्री शैलपुत्री का पूजन प्रारंभ....जप के समय आधार चक्र पर ध्यान

बोधन नवरात्रि का द्वितीय दिवस- माँ ब्रह्मचारिणी का पूजन करते हुए साधकगण।जप के समय मूलाधार चक्र पर ध्यान...

बोधन नवरात्रि-तीसरा दिन,माता चंद्रघंटा की प्रार्थना करते साधक गण, जप के समय स्वाधिष्ठान चक्र पर ध्यान...

दिनांक -06-10-24 ,शारदीय नवरात्र के चतुर्थ दिवस को नवदुर्गा के चौथे स्वरूप माता कूष्माण्डा का पूजन धूमधाम से किया गया।आज का ध्यान नाभिचक्र पर किया गया।माता कूष्माण्डा के पूजन से लोभ,मोह, अहंकार का नाश होता है,जिससे साधक भगवती के परम तेज को धारण करता।

बोधन नवरात्रि- पाँचवा दिन स्कंदमाता का पूजन करते साधकगण, जप के समय अनाहत(हृदय) चक्र पर ध्यान

बोधन नवरात्रि-षष्ठम् दिवस माँ कात्यायनी का पूजन करते भक्त गण, जप के समय विशुद्धि(कंठ,गला) चक्र पर ध्यान

बोधन नवरात्रि- सप्तम दिवस माता कालरात्रि का पूजन करते साधक गण जप के समय आज्ञा(भृकुटी) चक्र पर ध्यान

बोधन नवरात्रि-अष्टम दिवस माँ महा गौरी का पूजन करते साधक गण जप के समय सहस्रार (मुकुट)चक्र पर ध्यान...

बोधन नवरात्रि-नवम दिवस माता सिद्धिदात्री का पूजन और अनुष्ठान की पूर्णाहुति करते परिजन जप के समय आज का ध्यान सिद्धिचक्र(सिर का सर्वोच्च स्थान) पर ध्यानटी

पूर्णाहुति की लंबी क़तार...

यज्ञ करते याजकऔर यज्ञ कराती देवकन्या

ज्ञान प्रसाद,भोजन प्रसादऔर देव प्रसाद

अष्टमी और नवमी के प्रगेश्वर महादेव...

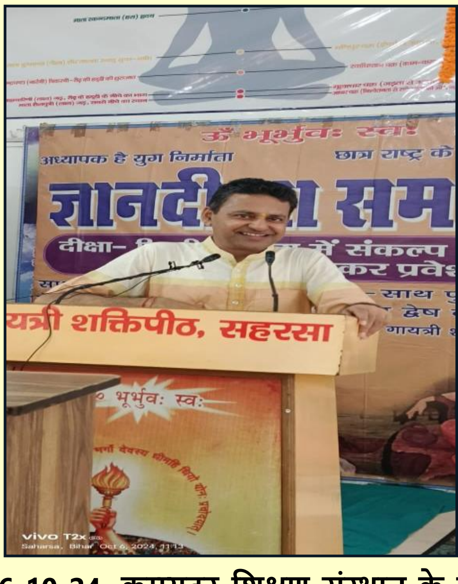

दिनांक-06-10-24 ,कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान के नये सत्र के छात्र छात्राओं का ज्ञान दीक्षा समारोह आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर किया गया।दीप प्रज्वलन में डाक्टर कल्याणी सिंह, डाक्टर सुभम कुमार, कैप्टेन गौतम सिंह, संजय वर्मा, विक्रम चौधरी तथा उमा चौधरी थे।इस अवसर पर डाक्टर कल्याणी सिंह ने कहा-शारीरिक और मानसिक विकास पर ध्यान दें।सत्र को संबोधित करते हुए डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा-आज एक साथ ज्ञान दीक्षा एवं दीक्षांत समारोह संपन्न हो रहा है।ज्ञान दीक्षा के संबंध में कहा-ज्ञान प्राप्त करने केलिए अपने आप को तैयार करना पड़ता है।संस्कृति संस्कार तथा अनुशाशन केलिए सजग रहना पड़ता है।कहा-दीक्षांत समारोह का मूल उद्देश्य दक्षता प्राप्त करना है।इस अवसर पर कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान के उत्तीर्ण छात्र छात्राओं को उपहार स्वरूप लैपटाप दिए गए। प्रथमपुरस्कार-दीक्षाकुमारी;द्वितीय पुरस्कार साक्षी कुमारी तथा तृतीय पुरस्कार प्रज्ञा कुमारी को दिया गया। इसके साथ प्रमाण पत्र भी दिए गए। इस अवसर पर ललन कुमार सिंह तथा कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान के शिक्षक-समरकांत मिश्र,प्रियव्रत कुमार तथा हरिश जायसवाल थे।मां कूष्माण्डा का पूजन जयन्ती, सुवर्णा तथा अवंतिका ने करवाया।

दिनांक-13-10-24 व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा- व्यक्तित्त्व के परिष्कार के लिए तीन चीन जरूरी है। गान, ज्ञान, और ध्यान । कहा-सभी धर्मों में प्रार्थना है, प्रार्थना सिर्फ याचना नहीं है बल्कि कृतज्ञता का भाव है। प्रार्थना से मन निर्मल हो जाता है, मन की सारी नकारात्मकता चली जाती है। प्रार्थना को गंभीरता से लेने पर दिव्य उर्जा आपके अंदर आती है। इस अवसर पर प्रशांत जायसवाल C.E.O ने संबोधित करते हुए कहा – गायत्री कम्प्युटर शिक्षण संस्थान बच्चों के लिए जो भी योगदान दे रहा हूं वह डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ही मेरे प्रेरणा श्रोत है। उन्होंने बच्चों से कहा - डिग्री के साथ-साथ- कौशल विकास पर ध्यान दें।

हर दिन की तरह आज भी जरूरतमंदों के बीच गायत्री परिवार सहरसा

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, सहरसा में आयोजित तीन दिवसीय Bag less Session Program (दिनांक 23 से 25 अक्टूबर) में Divine Workshop के माध्यम सेयोग, व्यायाम, प्राणायाम, आहार - विहार,नैतिक शिक्षाआदि विषयों की कक्षा लेते गायत्री परिवार सहरसा के कार्यकर्ता...

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, सहरसा में आयोजित तीन दिवसीय Bagless Session Program (दिनांक 24 से 26 अक्टूबर) का समापन हुआ। जिसमे गायत्री परिवार सहरसा द्वारा Divine Workshop के माध्यम से योग, व्यायाम, प्राणायाम, आहार - विहार,नैतिक शिक्षा आदि विषयों की कक्षा ली....

गायत्री परिवार से केंद्रीय विद्यालय में आए प्रतिनिधियों से बच्चों को परिचय कराते विद्यालय के शिक्षक...

बच्चों को आदर्श दिनचर्या के बारे में बताती युवती मंडल की श्रुति...

योग प्राणायाम के लाभ के बारे में बताते युवा मंडल के सुंदरम...

भ्रामरी प्राणायाम करते बच्चे...

हमारा आहार कैसा हो? क्या खाए, कब खाए, कितना खाएं , ये बातें बताते युवामंडल के भाई प्रखर...

हमारे जीवन में प्रार्थना के महत्व को बताते युवामंडल के भाई विनीत...

जीवन जीने की कला एवम नैतिक शिक्षा की बातें बताते युवामंडल के भाई चंदन...

हमारे जीवन में अनुशासन के महत्व को बताती महिला मंडल की सीमा...

दिनांक 25 अक्टूबर (शुक्रवार) को शांभवी बाल संस्कराशाला , रेलवे कॉलोनी (सहरसा) में संस्कराशाला के बच्चों एवम उनके अभिवावकों के साथ दीपावली पूर्व दीप यज्ञ के माध्यम से दीपोत्सव मनाया गया। साथ ही साथ उन्हें बताया गया, कैसे दिवाली पटाखों एवं प्रदूषण के बिना मनाया जा सकता है।

दिनांक 29/10/2024 को गायत्री शक्तिपीठ श्री राम बाल संस्कारशाला में दीप यज्ञ मनाया गया

डॉ अरुण कुमार जायसवाल जी इंडक्शन प्रोग्राम में इमोशनल इंटेलिजेंस पर सहरसा कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में प्रथम वर्ष के इंजीनियरिंग छात्रों की क्लास लेते हुए

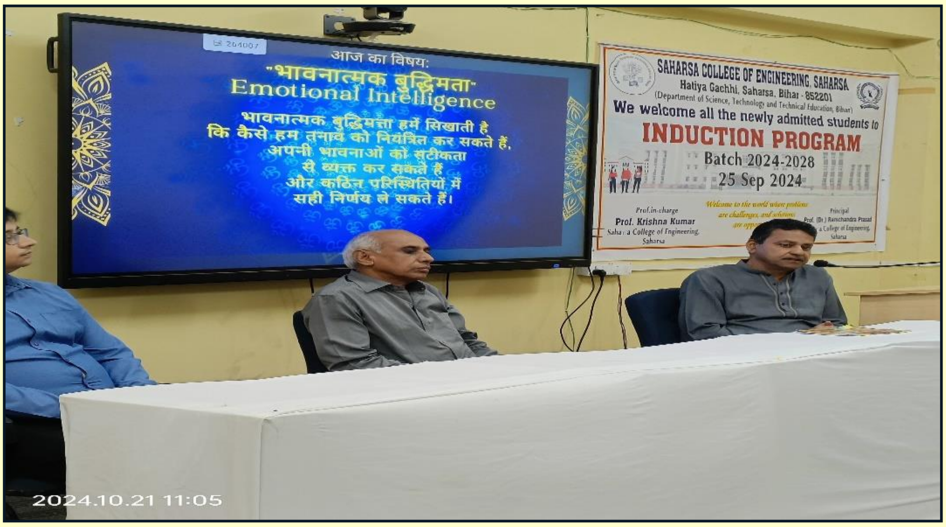

सहरसा कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग के प्रथम वर्ष के इंजीनियरिंग छात्रों के इंडक्शन प्रोग्राम के दौरान श्री हरीश जयसवाल, प्रोफेसर (डॉ) रामचंद्र प्रसाद और डॉ अरुण कुमार जयसवाल

डॉ. अरुण कुमार जायसवाल को मोमेंटो के रूप में पौधा देते हुए सहरसा कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग के प्राचार्य प्रोफेसर (डॉ) रामचंद्र प्रसाद

दैनिक समाचार पत्रो में गायत्री शक्तिपीठ सहरसा की छपी खबरें

संस्कृति, संस्कार और अनुशासन के लिए रहना पड़ता है सजग

लैपटाप व प्रमाण पत्र के साथ बच्चे व अतिथिगण ● जागरण

संवाद सूत्र, जागरण, सहरसा: शहर के गायत्री शक्तिपीठ में कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान के नये सत्र के छात्र छात्राओं का ज्ञान दीक्षा समारोह आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ डा. कल्याणी सिंह, डा. शुभम कुमार, कैप्टन गौतम कुमार, संजय वर्मा,विक्रम चौधरी तथा उमा चौधरी ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। डा. कल्याणी सिंह ने कहा कि शारीरिक और मानसिक विकास पर ध्यान दें। सत्र को संबोधित करते हुए गायत्री शक्तिपीठ के ट्रस्टी डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि आज एक साथ ज्ञान दीक्षा एवं दीक्षांत समारोह संपन्न हो रहा है।

ज्ञान दीक्षा के संबंध में कहा कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपने आप को तैयार करना पड़ता है'। संस्कृति संस्कार तथा अनुशासन के लिए सजग रहना पड़ता है। दीक्षांत समारोह का मूल उद्देश्य दक्षता प्राप्त करना है। इस अवसर पर कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान के उत्तीर्ण तीन छात्राओं को उपहार स्वरूप लैपटाप दिए गए। कंप्यूटर में सर्वाधिक अंक लानेवाले प्रथम स्थान पर दीक्षा कुमारी, द्वितीय पुरस्कार साक्षी कुमारी तथा तृतीय पुरस्कार प्रज्ञा कुमारी को दिया गया। इसके साथ प्रमाण पत्र भी दिए गए। इस अवसर पर ललन कुमार सिंह, कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान के शिक्षक समरकांत मिश्र, प्रियव्रत कुमार तथा हरीश जायसवाल थे। इससे पहले गायत्री शक्तिपीठ में नवरात्रा को लेकर पूजन कार्य जयन्ती, सुवर्णा तथा अवंतिका ने करवाई। मुख्य यजमान पंकज जायसवाल स पत्नी थे। आज का ध्यान नाभि चक्र पर किया गया। माता के पूजन से लोभ, मोह, अहंकार का नाश होता है। जिससे साधक भगवती के परम तेज को धारण करता है।

नवरात्र के चौथे दिन गायत्री शक्तिपीठ में माता कुष्मांडा पूजनोत्सव आयोजित

संस्कृति संस्कार तथा अनुशाशन के लिए सजग रहना पड़ता है: डॉ अरुण कुमार जायसवाल

नवबिहार दूत संवाददाता

सहरसा। गायत्री शक्तिपीठ में शारदीय नवरात्र के चतुर्थ दिवस रविवार को नवदुर्गा के चौथे स्वरूप माता कूष्माण्डा का पूजन धूमधाम से किया गया।आज का ध्यान नाभिचक्र पर किया गया।माता कूष्माण्डा के पूजन से लोभ, मोह, अहंकार का नाश होता है।

जिससे साधक भगवती के परम तेज को धारण करता है।अगर लोभ को संतोष की उर्जा में गमन हो तो भगवती कूष्माण्डा का साधक में प्रवेश होता है। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान के नये सत्र के छात्र छात्राओं का ज्ञान दीक्षा समारोह आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर किया गया।दीप प्रज्वलन में डाक्टर कल्याणी सिंह, डाक्टर सुभम कुमार, कैप्टेन गौतम सिंह, संजय वर्मा, विक्रम चौधरी तथा उमा चौधरी थे। इस अवसर पर डा कल्याणी सिंह ने कहा शारीरिक और मानसिक विकास पर ध्यान दें।सत्र को संबोधित करते हुए डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा- आज एक साथ ज्ञान दीक्षा एवं दीक्षांत समारोह संपन्न हो रहा है।ज्ञान दीक्षा के संबंध में कहा- ज्ञान प्राप्त करने केलिए अपने आप को तैयार करना पड़ता है।संस्कृति संस्कार तथा अनुशाशन केलिए सजग रहना पड़ता है। उन्होंने कहा दीक्षांत समारोह का मूल उद्देश्य दक्षता प्राप्त करना है। इस अवसर पर कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान के उत्तीर्ण छात्र छात्राओं को उपहार स्वरूप लैपटाप दिए गए। प्रथम पुरस्कार दीक्षाकुमारी, द्वितीय पुरस्कार साक्षी कुमारी तथा तृतीय पुरस्कार प्रज्ञा कुमारी को दिया गया। इसके साथ प्रमाण पत्र भी दिए गए। इस अवसर पर ललन कुमार सिंह तथा कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान के शिक्षक समरकांत मिश्र, प्रियव्रत कुमार तथा हरिश जायसवाल थे। मां कूष्माण्डा का पूजन जयन्ती, सुवर्णा तथा अवंतिका ने करवाई। मुख्य यजमान- पंकज जायसवाल स पत्नी मौजूद थे।

रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में आयोजित कार्यक्रम में चिकित्सक सहित अन्य।

लोभ मोह अहंकार का नाश करती है कूष्मांडा

सहरसा। रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में शारदीय नवरात्र के चतुर्थ दिवस को नवदुर्गा के चौथे स्वरूप माता कूष्माण्डा का पूजन धूमधाम से किया गया। माता कूष्माण्डा के पूजन से लोभ,मोह, अहंकार का नाश होता है,जिससे साधक भगवती के परम तेज को धारण करता है। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान के नये सत्र के ज्ञान दीक्षा समारोह का शुभारंभ डा. कल्याणी सिंह, डा. शुभम कुमार, कैप्टेन गौतम सिंह, संजय वर्मा, विक्रम चौधरी तथा उमा चौधरी ने किया। डा. अरुण कुमार जायसवाल नेकहा संस्कृति संस्कार तथा अनुशाशन केलिए सजग रहना पड़ता है। उत्तीर्ण छात्र छात्राओं को लैपटाप व प्रमाणपत्र दिए गए। जिसमें दीक्षा कुमारी कोप्रथम, साक्षी कुमारी को द्वितीय, प्रज्ञा कुमारी को तृतीय पुरस्कार दिया गया।

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र भेल आयोजन, प्रार्थना मात्र आग्रह नहि अपितु कृतज्ञताक भाव अछि : डॉ. अरुण कुमार जायसवाल

सहरसा, समदिया

शहर केर प्रतापनगर स्थित गायत्री शक्तिपीठ मे रवि दिन व्यक्तित्व परिष्कार सत्र क आयोजन कयल गेल।एहि परिष्कार सत्र कए संबोधित करैत डॉ जायसवाल कहलनि जे व्यक्तित्व परिष्कार लेल तीन गोट महत्वपूर्ण चीज जरूरी अछि।जाहि मे संगीत, ज्ञान आर ध्यान आवश्यक अछि।सब धर्म में, प्रार्थना खाली आग्रह नै छै बल्कि कृतज्ञता के भाव छै। प्रार्थना कए माध्यम स मन शुद्ध भ जाइत अछि।मन स सबटा नकारात्मकता दूर भ जाइत अछि। दिव्य ऊर्जा अहाँक भीतर तखन अबैत अछि जखन अहाँ प्रार्थना कैं गंभीरता सँ लैत छी। एहि

अवसर पर सीईओ प्रशांत जायसवाल द्वारा संबोधित करैत कहलनि जे गायत्री कम्प्यूटर शिक्षा संस्थान बच्चा सबहक लेल जे किछु योगदान द' रहल अछि, डॉ. अरुण कुमार जायसवाल हमर प्रेरणा स्रोत छथि। ओ बच्चा सभ कए डिग्री कए संग-संग कौशल विकास पर ध्यान देबय लेल कहलखिन्ह। नवरात्रि संस्कार समाप्त भेल आ आदिशक्तिक नवम रूप माता सिद्धिदात्रीक पूजा समाप्त भ गेल।एहि अवसर पर डॉ. अरुण कुमार जायसवाल कहलनि सब सुख माँ कए

आराधना स प्राप्त होइत अछि। सिद्धि कए ऊर्जा बहैत अछि। एहि सँ मोक्ष आ कैवल्य प्राप्त होइत अछि। नव दुर्गा कए रूप हमर व्यक्तित्व कए रूपांतरित करैत अछि आ एहि स आंतरिक शांति भेंटैत अछि। एहि अवसर पर लगभग 150 कुमारि कन्या कए भोजन उपलब्ध करा क पूर्णाहुति यज्ञ पूरा कयल गेल।

प्रार्थना सिर्फ याचना नहीं बल्कि कृतज्ञता का भाव निहित है: डॉ अरुण कुमार

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित

मीडिया लाइव न्यूज, सहरसा

शहर के प्रतापनगर स्थित गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित हुई।इस परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा व्यक्तित्त्व के परिष्कार के लिए तीन चीन जरूरी है।गान, ज्ञान और ध्यान।सभी धर्मों में प्रार्थना है, प्रार्थना सिर्फ याचना नहीं है बल्कि कृतज्ञता का भाव है। प्रार्थना से मन निर्मल हो जाता है, मन की सारी नकारात्मकता चली जाती है। प्रार्थना को गंभीरता से लेने पर दिव्य उर्जा आपके अंदर आती है।इस अवसर पर सईओ प्रशांत जायसवाल ने संबोधित करते हुए कहा गायत्री कम्प्युटर शिक्षण संस्थान बच्चों के लिए जो भी योगदान दे रहा हूं वह डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ही मेरे प्रेरणा श्रोत है। उन्होंने बच्चों से कहा डिग्री के साथ-साथ कौशल विकास पर ध्यान दें। नवरात्रि अनुष्ठान का समापन आदिशक्ति के नवम स्वरूप माता सिद्धिदात्री का पूजन अर्चन समाप्त हो गया। इस अवसर पर डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा- माता की पूजन से सभी सुख की प्राप्ति होती हैं। पूर्णता की उर्जा का गमन होता है। इसके साथ ही मोक्ष्य एवं कैवल्य की प्राप्ति होती है। नव दुर्गा का स्वरूप हमारे व्यक्तिको रूपांतरित करता है तथा इससे आंतरिक शांति की प्राप्ति होती है।इस अवसर पर लगभग 150 कुमारी कन्याओं को भोजन करा कर पूर्णाहुति यज्ञ संपन्न हुआ।

उज्जायी प्राणायाम के लाभ

यह सांसों पर नियंत्रण पाने का एक प्राणायाम है। इसे ओसियन ब्रीथ के नाम से भी जाना जाता है। इस प्राणायाम को करने से शरीर में गर्म वायु प्रवेश करती है और दूषित वायु निकलती है।

उज्जायी प्राणायाम को करने का तरीका:

- शांत जगह पर बैठ जाएं।
- आंखें बंद करें।
- मुंह को थोड़ा सा खोलें और जीभ और मसूड़ों को आराम दें।
- नाक से धीरे-धीरे लंबी और गहरी सांस लें।
- मुंह से सांस छोड़ते समय हल्की सी शअह्हाश ध्वनि निकालें।
- सांस लेना और छोड़ना दोनों नाक से करना चाहिए।
- शुरुआत में कम से कम 5 मिनट तक करें और बाद में इसे बढ़ाकर 10-15 मिनट तक करें।

उज्जायी प्राणायाम के फ़ायदे:-
तनाव और दिमाग को संतुलित करने में मदद करता है।

माह अक्टूबर में इन गणमान्य अतिथियों ने पाँच दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा एवं रूद्राभिषेक, यज्ञ एवं साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा (गान, ज्ञान, ध्यान) में भाग लिया -

- डॉ० कल्याणी सिंह - गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के ज्ञान दीक्षा एवं दीक्षांत समारोह एवं व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया
- डॉ० शुभम कुमार . - गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के ज्ञान दीक्षा एवं दीक्षांत समारोह एवं व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया
- कैप्टन गौतम सिंह- गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के ज्ञान दीक्षा एवं दीक्षांत समारोह एवं व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया
- प्रशांत कुमार (मलेसिया, Founder - ENTROPIA, Non Executive Director of Astro Holdings and a Proficient Writer) - व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया

आगामी कार्यक्रम

प्रत्येक रविवार व्यक्तित्व परिष्कार परिष्कार सत्र की कक्षा आयोजित है।

अखण्ड ज्योति

हर बार मनाते हम दीपावली, दीपों की सजाते माला
रच-रचकर सजाते घरों को, घर के बाहर के चबूतरों को ।
यही नहीं मार्गों को भी, सूना नहीं छोड़ते कहीं भी
जगमग जग होता प्रकाशित, मन ही मन होते आनन्दित ।।
पर एक कोना छूट जाता दोस्तों, वह कोना है आत्मा का
आत्मा की ज्योति रह जाती यूँ ही, हृदय की गलियाँ रह जातीं सूनी ।
आओ इस बार मनाएँ दीपावली ऐसी, आत्मा के दीपक जल जाएँ
मन के अन्धेरे पर प्रकाश के विजय का, आओ हम परचम लहराएँ ।।
आत्मा की ज्योति सदा जलती है, आज भी जलती, कल भी जलती
राम, कृष्ण, शंकर, विवेका बनो तो, वह सदियों-सदियों तक जलती ।
वैसी ज्योति हम सब के अन्दर भी, पर कुसंस्कारों की वहाँ धूल जमी है
बस उसी धूल को हटाकर दोस्तों, चलो, आत्म दीप हम भी जला लें ।।
खुद भी हों हम सब प्रकाशित, और करें अन्यों को प्रकाशित
यह दीपावाली ऐसी मनाएँ, हम ही नहीं, जन-जन हों प्रकाशित ।
आत्म ज्योति जो जले हम सब की, बन जाए वह जग की ज्योति
जगमग हो जाए जग यह सारा, बाहर ही नहीं अन्दर से भी ।।
मन के सारे कूड़े-कचरों को, हृदय के महा श्मशान में जला दें
उस श्मशान में आत्मशिव की, आओ हम मूरत सजा लें ।
सूरत बदल दें अपनी और जग की, शिव-शक्ति के गणेश बन जाएँ
"तमसो मा ज्योतिर्गमय' के जयघोष से, अखण्ड ज्योति बन हम मुस्काएँ ।।

– डॉ. लीना सिन्हा

परिचय

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते।।

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

अखिल विश्व गायत्री परिवार का दर्शन है- मनुष्य में देवत्व का जागरण और धरती पर स्वर्ग का अवतरण। यह पूरे युग को बदलने के अपने सपने को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में आध्यात्मिक और सामाजिक गतिविधियों को अंजाम देता है। इन गतिविधियों का मुख्य फोकस विचार परिवर्तन आंदोलन है, जो सभी प्राणियों में धार्मिक सोच विकसित कर रहा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार के गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में सहरसा और आसपास के क्षेत्रों में स्थित गायत्री परिवार के सदस्य शामिल हैं। गायत्री शक्तिपीठ ट्रस्ट, सहरसा स्थानीय निकाय है जो सहरसा और उसके आसपास कई आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित अनेकों उल्लेखनीय गतिविधियों, जैसे- यज्ञ, संस्कार, बाल संस्कारशाला, पर्यावरण संरक्षण, स्वावलंबन प्रशिक्षण, योग प्रशिक्षण, कम्प्यूटर शिक्षण, ह्यूमन लायब्रेरी, भारतीय संस्कृति प्रसार, स्वास्थ्य संवर्धन, जीवन प्रबंधन, समय प्रबंधन आदि वर्कशॉप का आयोजन करता है। गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के सदस्य व्यवसायी, आईटी पेशेवर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, शिक्षक, डॉक्टर आदि हैं, जो सभी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा निर्धारित आध्यात्मिक सिद्धांतों के प्रति उनकी भक्ति और प्रेम से बंधे हैं, जिन्हें परमपूज्य गुरुदेव के रूप में स्मरण किया जाता है।

स्वेच्छा सहयोग यानि अपना अनुदान इस Account No. पर भेज सकते हैं

Account No. – 11024100553 IFSC code – SBIN0003602

पत्राचार	:	गायत्री शक्तिपीठ, प्रतापनगर, सहरसा, बिहार (852201)
संपर्क सूत्र	:	06478-228787, 9470454241
Email	:	gspsaharsa@gmail.com
Website	:	https://gsps.co.in/
Social Connect	रू	https://www.youtube.com/@GAYATRISHAKTIPEETHSAHARSA
		https://www.facebook.com/gayatrishaktipeeth.saharsa.39
		https://www.instagram.com/gsp_saharsa/?hl=en
		https://twitter.com/gsp_saharsa?lang=en
		https://www.linkedin.com/in/gayatri-shaktipeeth-saharsa-21a5671aa/